सी.एफ.टी. की पहल

श्री इतवारी साहू, (उम्र 56 वर्ष) तथा उनकी पत्नी श्रीमती बुधियारिन, ग्राम पंचायत मौरीकला, ब्लाक कुरूद, जिला धमतरी के निवासी है । इनके परिवार में इनकी पत्नी और तीन बेटे और बहू है। दो वर्ष पहले बेटों के आपसी झगड़े के चलते इतवारी साहू ने अपनी 4 एकड़ जमीन अपने तीनों बेटों में बांट दी तथा अपनी पत्नी के साथ अलग जीवन यापन करने लगा।

जमीन के बदले में उसके बेटे अपने पिता को 4–4 बोरा धान वार्षिक देने लगे, परन्तु तीनों बेटों द्वारा दिया गया धान इतवारी तथा उसकी पत्नी के वर्ष भर गुजर बसर के लिये पर्याप्त नही था और न ही उनके पास अतिरिक्त जमीन थी जिसमें फसल उगाकर वे अपना जीवन यापन सुचारू रूप से कर सके।

इतवारी तथा उसकी पत्नी मजदूरी करने विवश हो गये । इतवारी के पास कृषि मजदूरी तथा रोजगार गारंटी में काम करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था । ग्राम पंचायत में भी रोजगार गारंटी का काम पिछले कुछ वर्षो में सिर्फ 20–30 दिवस का ही उपलब्ध हो पा रहा था। वर्ष 2014 शासन द्वारा मनरेगा में आईपीपीई (सघन सहभागी अभ्यास नियोजन) का क्रियान्वयन किया गया । जिसके तहत अति गरीब परिवारों को चिन्हांकित कर उनकी आजीविका के लिये योजना तैयार करना था। क्रियान्वयन के लिये धमतरी कुरूद ब्लाक में सीएफटी दल के रूप में कार्ड संस्था का चयन किया गया ।

सीएफटी दल ने ग्राम पंचायत में वार्ड अनुसार योजना तैयार करते समय इतवारी साहू को अति गरीब परिवार के रूप में चिन्हांकित किया और उनका व्यक्तिगत सर्वे भी किया । साथ ही साथ पूरे गांव में समेकित योजना तैयार की। तैयार योजना के तहत पंचायत की जिस भूमि पर सामुहिक कार्य के अंतर्गत भूमि समतलीकरण होना था। सीएफटी दल तथा ग्रामीणों ने मिलकर ग्राम सभा में तय किया कि उक्त जमीन का समतलीकरण करने के बाद उसे रू. 3400/- वार्षिक(रेगहा) पंचायत में जमा करने पर इतवारी साहू को कृषि करने के लिये दिया जाना है।"

इतवारी साहू को कृषि योग्य भूमि का सही उपयोग समझ में आया और उन्होंने 1.5 एकड़ भूमि पर खरीफ मौसम में धान की खेती कर 50 बोरा (25क्विंटल) धान की उपज प्राप्त की। इस प्रकार उसे रू. 27000/- की आय हुआ। तत्पश्चात उन्होंने सीएफटी दल के कृषि विशेषज्ञ की सलाह ली और रबि फसल के रूप में बैंगन, मिर्च, भिण्डी तथा धनिया आदि सब्जियों का उत्पादन कर रहा है और वर्तमान सत्र में अब तक 20 कि.ग्रा. मिर्च बाजार में बेच चुका है। उनके अनुसार सब्जी उत्पादन में कीट-नाशक तथा उर्वरकों की काफी लागत आती है, इसलिये अब वह वैज्ञानिक पद्धति अपनाकर जैविक कृषि करना चाहता है और इसके लिये उन्होंने शासन के नरेगा अंतर्गत नाडेप टैंक / वर्मी कम्पोस्ट की मांग की हैं ताकि उनके घर में उपलब्ध बैलों के गोबर का सही उपयोग हो सके और लागत कम कर लाभ में बढ़ोतरी हो सके।

वर्तमान में इतवारी मनरेगा योजना से लाभान्वित होकर आराम से अपना व अपनी पत्नी का जीवन यापन कर रहा है तथा सीएफटी सदस्यों की सलाह से आने वाली योजनाओं का लाभ लेने हेतु उत्साहित है।

लेख - सुजय विश्वास
सहयोग - विवेक जांगड़े, दीपक बीलेसिया